Multidisciplinary | Online | Biannual (June & December) | Start Year - 2023

आधुनिक भारतीय कला में क्रॉस हैचिंग तकनीक द्वारा अभिव्यक्ति के विविध रूप

ईषा रानी, षोधार्थी
डॉ० नाज़िमा इरफान, असिस्टेंट प्रोफेसर
विजुअल आर्ट: ड्राइंग एण्ड पेन्टिग विभाग,
रघुनाथ गर्ल्स पी०जी० कॉलेज, मेरठ यू०पी०

सारांश&

भारत की सभ्यता प्राचीन काल से ही कला संस्कृति का प्रर्याय रही हैं। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ, वैसे वैसे कला का भी विकास होता गया। परिणामस्वरूप भारत की भूमि पर अनगिनत कला शैलियों का उदभव हुआ। जिससे भारत को कई प्रकार की कलाओं के संगम के रूप मे जाना जाता है, क्योंकि यहां पर विभिन्न जाति व धर्मो के लोग निवास करते है। इसलिए भारतीय कला का एक दीर्घ व गौरवशाली इतिहास रहा, जिसने कला को एक नया आयाम प्रदान किया।

यदि भारतीय चित्रकला के इतिहास की ओर ध्यान अग्रसर किया जाये, तो 5000 वर्ष पहले मानव ने अपने विचारो को अभिवक्त करने का जो मार्ग अपनाया था, वह चित्रकला ही थी। इसके माध्यम से मानव अपने विचार और दिनचर्या को शिला पर उकेर कर अपने अर्न्तमन भावो को चित्रित करता था, जो रेखाओ के माध्यम से पूर्ण होता था। क्योकि चित्रकला में रेखा एक ऐसा तत्व है, जिसके द्वारा मानव अपने भावो को व्यक्त करता है। प्राचीन काल से ही प्रत्येक आकृति मे रेखा तत्व की प्रधानता देखी गई है। यह मानव के सभ्य होने का प्रमाण था। क्योकि प्रागैतिहासिक कालीन मानव शिकार कर अपनी उदय क्षुधा शान्त करता था। वह अपनी सम्पूर्ण दिनचर्या को शिला पपर उकेर देता था। जिसके उपयोग से मानव अपनी बात को दुसरों तक पहुँचाता था। इस विषय पर काफी साक्ष्य प्राप्त हुए, जिससे इसका अध्ययन विषय के रूप में होने लगा। विभिन्न स्थानों से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्र मानव जाति की प्रारम्भिक जीवन यात्रा की विशद व प्ररेणायुक्त सार हैं। जिसमें मानव की उल्लासमय जीवन के आन्तरिक भावों की सफलतम अभिव्यक्ति दिखाई देती हैं।

प्रागैतिहासिक काल से ही यह प्रकिया गतिशील अवस्था मे है, कि चित्रकार चित्रों का कलात्मक सृजन करने के लिए रेखाओ के माध्यम से ही चित्रो का सृजन कार्य पूर्ण करता है, क्योकि रेखाओ से ही आकृति का निर्माण होता है आकृति के निर्माण के लिए चित्रकला के कुछ महत्तवपूर्ण तत्वों (रेखा, रूप, रंग, तान, पोत, अन्तराल) की आवश्यकता होती हैं। जिनके द्वारा किसी भी धरातल पर आकृति को चित्रित कर भावों व रसों की निष्पति की जाती हैं। भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान रही हैं। रेखा ही चित्रित आकृति का आधार कहलाती हैं। यदि रेखायें ही सम्पूर्ण चित्र मे छाया–प्रकाश का कार्य करे, तो चित्र का वास्तविक स्वरूप बदल जाता है, जो दर्शनीय हैं। इन्ही रेखाओं को यदि पद्धति के रूप में प्रयोग किया जायें, तो यह क्रॉस हैचिंग के नाम से जानी जाती है, जिसका उपयोग करके चित्रकार अपने चित्र को एक नया रूप प्रदान करता हैं।

मुख्य शब्द&भारतीय चित्रकला, कलातत्व रेखा, क्रॉस हैचिंग, अशोक भौमिक, मुकेश बिजौले, महावीर वर्मा।

प्रस्तावना:-

भारतीय चित्रकला के इतिहास में प्रागैतिहासिक काल से ही रेखाओं में सौन्दर्य समाहित रहा हैं। समय के साथ–साथ चित्र रचना मे पद्धतियो का समावेश होता गया, जिस कारण आज का चित्रकार नये–नये माध्यमो व पद्धतियो की खोज करके अपने चित्रो में नित नवीन प्रयोग करता है। क्रॉस हैचिंग पद्धति भी चित्रकला रेखा तत्व से बनी एक प्राचीन पद्धति है। जिसका प्रयोग सर्वप्रथम, .मुगल काल मे जहॉगीर के काल मे रेखा परदाज के नाम से हुआ, इस पद्धति को जहॉगीर कालीन परदाज भी कहा जाता है, यह आकृति में छाया प्रकाश का कार्य कर चित्र को एक नया रूप प्रदान करती है।

भारतीय चित्रकला:-

मानव जन्म से ही कलाकार माना जाता है,भारतीय चित्रकला का इतिहास अपने आप मे एक विस्तृत विषय रहा है। कला जगत मे चित्रकला एक ऐसी कला रही, जिसके अर्न्तगत किसी भी प्रकार की जाति व धर्म का कोई बन्धन दर्शित नही होता हैं। प्रागैतिहासिक काल मे जब मानव अपने भावो तथा विचारो को शिला पर उकेरता था, तो वह एक आकृति का निर्माण करता था। तथा अपनी बातो को दूसरो तक पहुॅचाता था। क्योकि गुहा–गृही मानव मुख्य रूप से आखेटक था। और साथ ही साथ यही चित्रकार भी था। गुहा मानव जब शिकार पर जाता था,तो समस्त शिकारी दृश्य तथा शिकारी योजनाओं को चित्र के माध्यम से अपने साथियों को समझाता था। तथा उनसे कैसे दूर रहा जायें, यह समस्त चेतावनी वह चित्र के माध्यम से ही देता था। इसी भाषा से चित्रकला की उत्पत्ति हुई। क्योकि यह भाषा के विकास का मूल स्त्रोत थी। मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए चित्र बनायें, यह अटल सत्य है। इन चित्रों में जंगली महिष, पशु–पक्षी, शिकारी तत्कालीन जन–जीवन आदि हर्ष और आनंद के भाव परिलक्षित होते हैं। आदिकालीन चित्रों में प्रतीकात्मक चित्र भी दर्शित होते है, जो उस के मानव की सभ्यता व आस्था को दर्शित करते हैं। तथा लोक– परम्परा के दायरे को बढ़ावा देते हैं। गुहा–गृही मानव द्वारा निर्मित चित्र उच्चकोटि के नही कहे जा सकते अपितु मन के भावों को व्यक्त करने मे पूर्ण रूप से सक्षम हैं। क्योकि इन चित्रों को स्वान्तः सुखाय के लिए निर्मित किये गये हैं। अल्प रेखांकन द्वारा जिन आकृतियों का निर्माण किया गया वह अपना परिचय बखूबी प्रस्तुत करती हैं। जो बडा ही मनोरम तथा हृदय स्पर्शी हैं।

इसी क्रम में अजन्ता के चित्रो मे भी रेखाओं का अनूठा संगम देखने को मिलता हैं। मध्ययुगीन कलाओं पाल, अपंभ्रश मे भी रेखाओं का अतुल्नीय योगदान दर्शित होता हैं। साथ ही साथ लघु चित्रकारी मे भी रेखाओं का कलात्मक प्रयोग परिलक्षित होता हैं, क्योकि रेखायें ही सृजित की जा रही आकृति का सार है।

fp= u0&01

रेखा:-

चित्रकला का एक ऐसा तत्व जिसका प्रयोग प्रागैतिहासिक काल से प्रचलित रहा। रेखा के द्वारा ही मानव अपने भावों को व्यक्त करता था, तथा दूसरों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान करता था। सर्वविदित हैं, कि दो बिन्दुओं के मध्य न्यूनतम दूरी को रेखा कहा जाता हैं। यह एक दिशात्मक व समानांतर रेखा हैं। जो किसी भी आकृति को रूप देने में सक्षम होती हैं। सरल शब्दों में यह एक ऐसी रेखा हैं, जिसका कोई शुरूआती व अन्तिम बिन्दु नही होता। यह क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर हो सकती हैं। इसे बाएं या दाएं, ऊपर या नीचे खींचा जा सकता हैं।

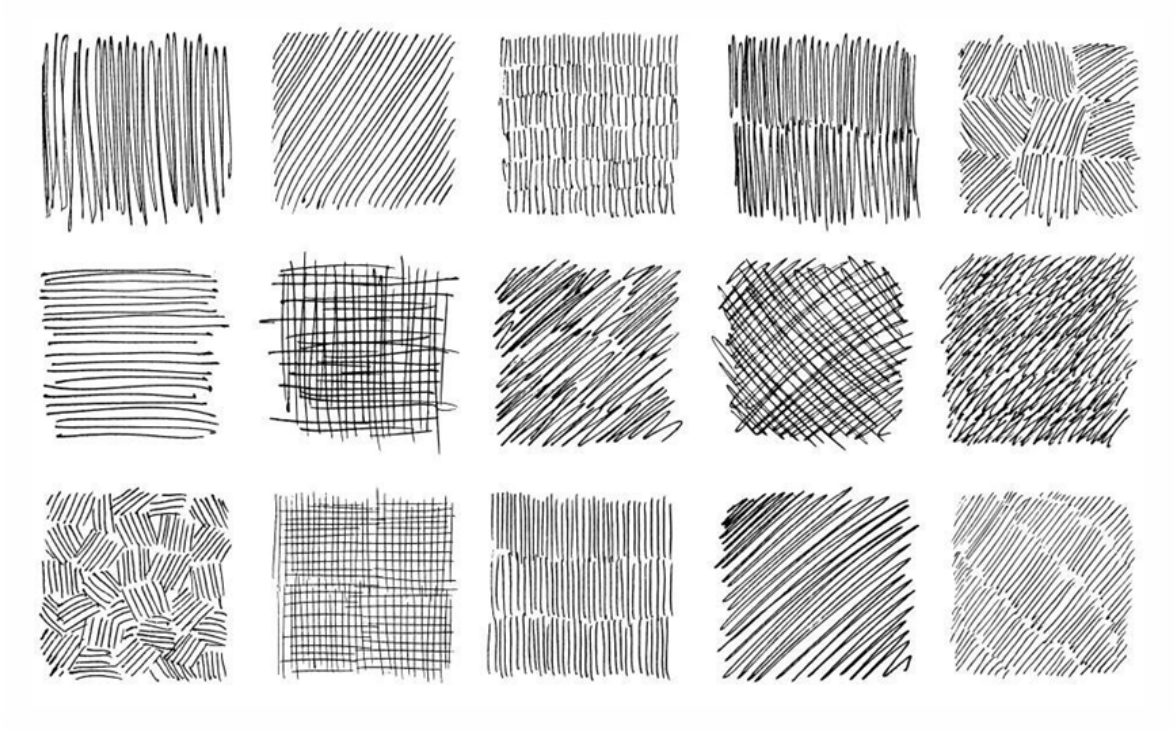

चित्र न0–02

हैचिंग:-

चित्रकला में हैचिंग एक कलात्मक तकनीक हैं, जिसमें बनावट, छाया के प्रभाव को दर्शाने के लिए समानांतर रेखाओं का प्रयोग किया जाता हैं। यह लम्बाई, निकटता आदि के आधार पर खीचीं जाती है। चित्रों या किसी चित्रित की गई आकृति में गहराई दर्शाने के लिए हैचिंग का प्रयोग सर्वोपरि हैं। हैचिंग एक रेखात्मक प्रयोग हैं। यह रेखाओं के द्वारा दिशा निर्धारित खीचीं जाने वाली कलात्मक तकनीक हैं। हैचिंग विभिन्न प्रकार से जानी जाती है।

1. समानांतर हैचिंग
2. क्रॉस हैचिंग
3. कंटूर/समोच्च हैचिंग
4. सर्कुलिज्म हैचिंग
5. स्ट्रिपलिंग हैचिंग
6. स्क्रिब्ड हैचिंग

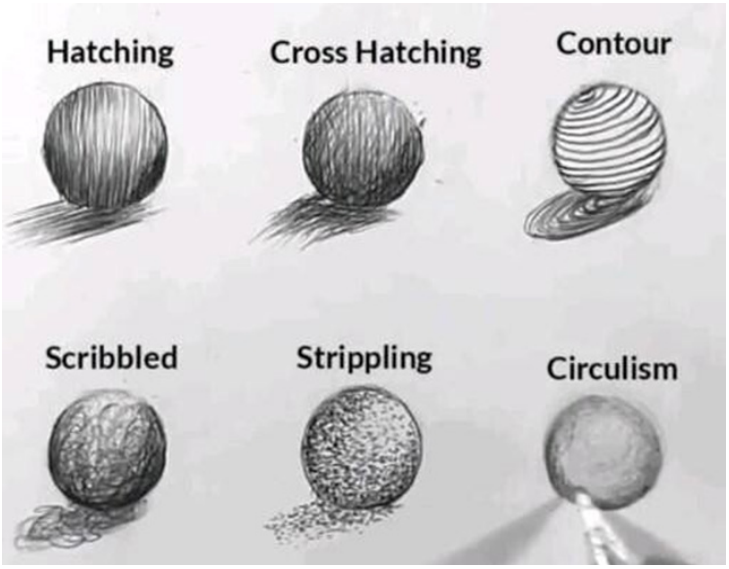

fp= u0&03

क्रॉस हैचिंग:-

क्रॉस हैचिंग एक ऐसी कला तकनीकी है जिसके अंतर्गत किसी चित्र मे छाया, गहराई बनावट दिखाने के लिए एक दूसरे को काटती हुई परस्पर रेखाओ का प्रयोग किया जाता है। इसमें पहले छाया, गहराई दर्शाने के लिए समानन्तर रेखाए खींची जाती है, फिर इन रेखाओं के ऊपर विपरीत दिशा में रेखाओं को समानन्तर खींचा जाता है, जिससे विपरीत रेखाओ का एक सेट तैयार हो जाता है। जो आकृति का निर्माण कर छायाकिंत क्षेत्र बनाता है। यह चित्र मे त्रि– आयामिता को दर्शाती है।

रेखाचित्रण की यह विधि परछाइयों को दर्शाती हैं। रेखाएं जितनी पास–पास होंगी चित्र में उतना ही गहराई का आभास होगा। क्रॉस हैचिंग सामान्यतः पेन, स्याही, पेसिंल, चारकोल, पेंट, क्रेयॉन, आदि चित्रकला सामग्री द्वारा बनाई जाती हैं, जो परस्पर समान्तर कम अंतराल वाली रेखाओं द्वारा चित्रों में गहराई का आभास कराती हैं। हल्की छाया के लिए चित्र में रेखाओं को एक–दुसरे से दूर खीचा जाता है। जबकि गहरी छाया के लिए रेखाओं को पास–पास परस्पर समान्तर खीची जाती हैं।

चित्र न0–04

क्रॉस हैचिंग को जीवन्त करते आधुनिक कलाकार माननीय 'अशोक भौमिक. ''माननीय मुकेश बिजौले, माननीय महावीर वर्मा

आज के समय में दर्शक चित्रों को संदर्भो के अनुरूप समझना चाहता हैं। इसलिए प्रत्येक कलाकृति को शीर्षक की आवश्यकता होती हैं, लेकिन कलाकृति पूर्ण तभी मानी जाती है। जब उसमें किसी भी सन्दर्भ का आवश्यकता न पडें। ऐसे कई चित्रकार हुए जिन्होने इन तथ्यों पर विशेष ध्यान आकर्षित किया। भावों व रेखाओं पर आधुनिक कलाकार अवनीन्द्र नाथ टैगोर (भारत माता) , रविन्द्रनाथ टैगोर (साक्षात्कार) आदि ने कार्य किया। इसी परम्परा व कला से प्रेरित समकालीन चित्रकार माननीय अशोक भौमिक जोकि मास्टर ऑफ क्रॉस हैचिंग के नाम से विश्व विख्यात हैं, ने चित्रकला को एक नया आयाम प्रदान किया। गतितशील समय से प्रख्यात चित्रकार अशोक भौमिक की अद्वितीय कला हैं। जिसमे उन्होने मानवतावाद की झलक स्पष्ट रूप से क्रॉस हैचिंग तकनीकी में दर्शित की हैं। यह एक ऐसे चित्रकार हैं। जिन्होनें कला के क्षेत्र में अकादमिक शिक्षा प्राप्त न करते हुए भी कला के माध्यम से हदयस्पर्शी संवेदना को चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया। इनका चित्रण विषय मानवीय भावों व संवेदनाओं का मिश्रण हैं। जोकि क्रॉस हैचिंग तकनीकी द्वारा बडे ही तार्किकता के साथ चित्रपट पर झलकता हैं।

अशोक भौमिक का नाम समकालीन कला में सर्वोपरि हैं। इसी कार्य क्षेत्र में हाल ही में अशोक भौमिक ने क्रॉस हैचिंग तकनीक में अपने पॉच दशकों का गौरवशाली सफर पूर्ण किया, जिसमें इन्होनें नये–नये आविष्कार के साथ विश्व स्तर पर चित्रकला को नये रूप में प्रस्तुत किया। इनके चित्रों में क्रॉस हैचिंग तकनीक में पैन एचिंग माध्यम का प्रयोग कर चित्रकला को एक नया आयाम प्रदान किया। इनके कार्य से काफी चित्रकार प्रेरित हुए, जिन्होने कला क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

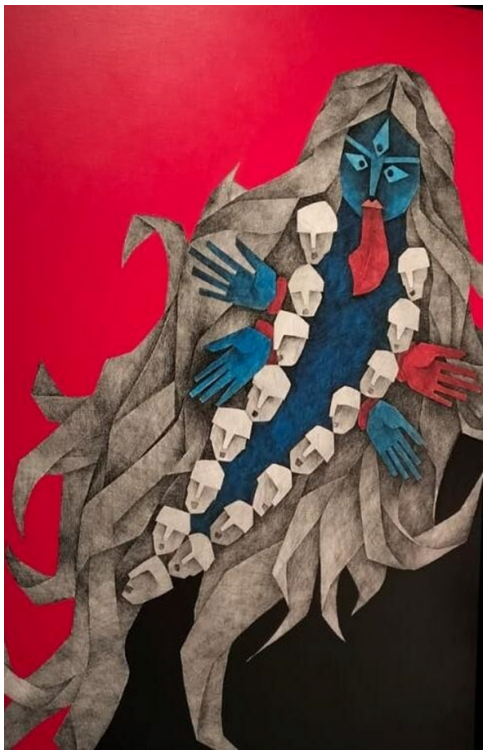

चित्र न0–05

चित्र न0–06

सभी चित्रकारों ने अशोक भौमिक जी के चित्रों पर अपने–अपने मंतव्यों को साझा करते हुए यह जानकारी प्रदान करायी ''कि अशोक दा ने मानवतावाद पर प्रकाश डालते हुए यथार्थ जन–जीवन को अपना चित्रण विषय बनाया हैं। क्योकि अशोक दा प्राचीन व धार्मिक अनुष्ठानों पर ध्यान न केन्द्रित करते हुए तत्कालीन घटनाओं के द्वारा अपने चित्रों को भावों व संवेदनाओं से परिपूर्ण बनाते हैं। क्योकि आज के समय में अमूर्तता पर प्रकाश डाला जाता हैं। जिस कारण चित्रों मे मानवतावाद लुप्त होता नजर आ रहा हैं। इसी अभाव को पूरा करने के लिए अशोक दा ने अपने चित्रों में मानव सम्बन्धी समस्त घटनाओं पर प्रकाश डाला तथा

क्रास हैचिंग तकनीकी का सर्वोत्तम प्रयोग करते हुए पैन एचिंग माध्यम को भी सर्वोपरि बनाया। जिस कारण आज अशोक दा का कार्य अतर्राष्ट्रीय इत्यादि प्राप्त कर रहा हैं। क्रॉस हैचिंग तकनीक का प्रयोग कर अन्य कलाकारों ने भी अपना–अपना योगदान दिया। जिनके कार्य को देखकर अशोक दा ने कुछ चित्रकारों को कैनवास व इंक उपहार स्वरूप प्रदान की। जिससे वह अपनी प्रतिभा को उच्च स्तर पर उभार सकें। जिसमें मुकेश बिजौले, महावीर वर्मा का नाम सर्वोवरि हैं।

मुकेश बिजौले

अपने चित्रों में रेखा का कल्पनात्मकता के आधार पर प्रयोग कर उज्जैन मध्यप्रदेश के मशहूर चित्रकार माननीय मुकेश बिजौले का नाम सर्वोपरि हैं। इन्होने अपने चित्रो में प्रकृति, रंग तथा लयात्मकता पर बल दिया हैं। चित्रों में रेखा द्वारा प्रकृति छटा तथा रंगो द्वारा भावों का कल्पनात्मक प्रदर्शन मानों मन मोह लेता है। मानवतावाद में प्रकृति को लयात्मकता के साथ प्रस्तुत करना तथा रंगो के सामाजस्यपूर्ण तरीके से चित्र को पूर्ण करना, उनके चित्रो को खास बनाता हैं। उनके ज्यान्तर चित्रों में सपाट पृष्ठभूमि पर गहरे स्ट्रॉक वाली मानवाकृतियो अंकित हैं। जो मुकेश बिजौले के चित्रों की पहचान हैं। उन्हे पृष्ठभूमि के आधार पर एकल चटख रंगों के प्रयोग करना ज्यान्तर प्रिय हैं, जो उनके चित्रों में मुख्य पात्रों के लिए उपयुक्त विस्तृत रेखाओं व प्रभावशाली स्ट्रॉक के साथ मिलता हैं।

यह चित्रकार होने के साथ–साथ अच्छे अभिनेता, नाटककार और नृत्यकार भी हैं। कर्नाटक चित्रकला परिषद में हाल ही में आयोजित हुई चित्रकला प्रदर्शनी में अशोक भौमिक ने मुकेश को बिजौल को ''जनता का कलाकार'' बताया हैं। क्योकि उनकी कलाकृतियों में हासिये पर पड़े समुदायों के जुलूसों पर केन्द्रित हैं। उन्होने अपने चित्रों का आधार सामाजिक बाहिष्कारिता या शक्तिहीन समुदाय को रखा हैं।

अशोक भौमिक के शब्दों मे ''समय आ गया हैं।, जब भारत के छोटे और कम ' सुविधा प्राप्त कस्बो के कलाकार समकालिन भारतीय कला परिदृश्य में अपनी जगह बनाने के लिए आगे आए।''

महावीर वर्मा:-

महावीर वर्मा का जन्म राजस्थान के बूंदी जिले के लाखेरी में हुआ था। तत्कालीन यह रतलाम, भोपाल, मध्यप्रदेश में कार्यरत हैं। इन्होने अपने चित्रों में रेखाओ के माध्यम से क्रॉस हैचिंग तकनीक को एक नये रूप में प्रस्तुत किया।

क्रॉस हैचिंग एचिंग माध्यम में इनके चित्रों की सराहना अति प्रिय हैं। इनकी कलाकृतियों में सामाजिक क्रम में निचले तबके के लोग शामिल हैं। जिनमें खासकर सामाजिक भेदभाव व आर्थिक तंगी के लोगों का जीवन इन्होने अपने अंतर्मन भावों से चित्रित किया हैं।

यह अशोक भौमिक द्वारा बनाये गये चित्र ''गुनाहों का देवता' जो कि धर्मवीर भारती का एक बहुचित्रित उपन्यास हैं। इसके आवरण पृष्ठ पर क्रॉस हैचिंग विधि से चित्रित किया गया था, को देखकर चित्रकला की ओर प्ररित हुए।

पेन एंड इंक को चित्र के माध्यम के रूप में अपनाना एक बडी चुनौती तो हैं, लेकिन एक चित्रकार के रूप में तैयार करना बहुत ही सही और कारगार माध्यम है। महावीर वर्मा ने क्रॉस हैचिंग तकनीक में पेन व इंक के माध्यम से समाजिक क्रम के पहलुओं को चित्रित किया । क्योकि उनका मानना हैं, कि कला जन्मोन्मुखी हैं। चित्रों के विषय बाहरी दुनिया में नही, बल्कि अपने आत्म एकान्त से प्राप्त होता हैं। उनका मानना हैं, कि चित्र कभी अच्छे या बुरे नही होते अपितु चित्रकार अपने अन्तर्मन भावों की अभि व्यक्ति करता हैं।
महावीर वर्मा के शब्दों में ''मुझे कभी किसी चित्र को बनाने के लिए सायास कोशिश नही करनी पडी। अनायास कोई चित्र भीतर उभरा और वह कैनवास पर उतर गया। विषय मुझे घर, अपने स्टूडियों और अपने एकान्त में ही मिल जाते हैं। इसका आशय यह नही कि मैं बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कट जाता हूँ, ऐसा नही कि बाहरी आवाजें सुनाई न देती, आवाजें अन्दर भी आती हैं। लेकिन रचना सुख समस्त झंझावतो से मुक्त कर देती हैं।''

fp= u0&07

निष्कर्ष :-

कला में समय के साथ परिवर्तन एक गतिशील घटना हैं। जो वैश्वीकृत दुनिया की परस्पर जुडी प्रकृति व परम्परा को दर्शाती हैं। यह चित्रकारों को नये–नये प्रयोगों के लिए प्रोत्साहित करता हैं। जिससे समय के साथ–साथ नयी–नयी तकनीकों, माध्यमों का अविष्कार सामने आता हैं। काफी चित्रकारों ने कला को अपने स्तर से एक नया आयाम प्रदान किया। जिससे आम दर्शक कला के प्रति रूझान को प्रदर्शित कर अपने स्तर से नयी तकनीकों का अविष्कार कर सकें। एक कलाकृति, रेखा, रंगो, रसों व भावों के द्वारा ही पूर्ण मानी जाती हैं। इसी परिपूर्णता को बनाये के लिए आज भी चित्रकार नये अविष्कारों के साथ चित्रकला को एक नई राह प्रदान कर सकें। जिससे उनके कार्य से प्रेरित होकर युवा कलाकार भी इस भारतीय कला गरिमा को बनायें रखने में सहयोग करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–
भौमिक, अ (2023, 1 जनवरी). चित्रकला चित्र और चित्रकार. प्रकाशन–परिकल्पना
अग्रवाल आर (2016). रूपप्रद कला के मूलाधार ण्ण इन्टरनेशनल पब्लिशिंग।
अग्रवाल आर (2017). भारतीय चित्रकला का विवेचन (कला विलास). इन्टरनेशनल पब्लिकेशन
भौमिक अ (4 मार्च 2022). भारतीय चित्रकला का इतिहास. परिकल्पना ण् एडिसन प्रकाशन।
from Style to success-artistic tips for the long creative journey.
https://yourstory.com/2020/05/style-success-artist-Creativity.

https:// Finearttutorials com/ guide/Cross-hatching.
https://www.abirpothi . com/visual- arts -101- hatching- drawing-techniques.

यू–ट्यूब विडियो–
GUFTAGOO with Ashok Bhowmick on Sansad TV.
Talking Tales Ashok Bhowmick on Prasar Bharti Archives.

पत्रिकाएँ एवं प्रदर्शिनियाँः–
अक्टूबर–दिसम्बर (2024). रंग–संवाद त्रैमासिक पत्रिका पब्लिकेशन आईसेक्ट, भोपाल एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविधालय, भोपाल
22–26 जनवरी 2019. म्जीदपब तेलजीउ 3 जेम ज्ञंतदांजां बेपजतांसं च्तपींजीए ज्ञनउंतं ज्ञतनचं त्वंकए ठमदहंसनतन 56001
साक्षात्कारः–
Short Interview on call with Ashok Bhowmick.
Live Interview with Ashok Bhowmick at Bikaner House, new Delhi.
Short Interview on call with Mahavir Verma.
Short Interview on call with Mukesh Bijole.

चत्र संग्रहः–
चित्र नं0:1– List of important Indian sites of prehistoric paintings.
1. https://www. jaranjosh.com/ general-knowladge.
fp= u0%a02&hatching techniques in pencil royalty
www.vector stock.com
चित्र नं0.03:– Sketch shading Techniques Image in.pinterest.com/pin/sketch-Shading-techniques-images
चित्र नं0:04– Drawing-Fall 2012: Rendering and Shading. html arts 10lb. blogspot.com.
चित्र न0:05– Live photoshoot of Ashok Bhowmick's painting.
चित्र न0: 06– मुकेश बिजौले– Take paintings picture of Mukesh Bijole Instagram profile and his exhibition catlog.
चित्र न0:07– महावीर वर्मा, रंग–सवाग, अक्टूबर–दिसम्बर 2024, त्रैमससिक पत्रिका, पब्लिकेशन आईसेक्ट, भोपाल एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल,
च्हम छव.18ए च्हम छव.22